चिती एवं आचार्य शिक्षा

डॉ. वसुधा वि. देव,

शासकीय अध्यापक महाविद्यालय,

अकोला.

DR.VASUDHA VINOD DEO Associate Professor Govt. college of education akola

चिती एवं आचार्य शिक्षा

डॉ. वसुधा वि. देव,
शासकीय अध्यापक महाविद्यालय,
अकोला.

NCF २००५ में प्रस्तुत कुछ विधानों की ओर मैं आप सभी महानुभावों का ध्यान खिंचना चाहूँगी।

वर्तमान अर्थव्यवस्था के जागतिकीकरण के कारण ज्ञान का रूपांतरण क्रय वस्तु में हो रहा है। एवं सभी मानवी व्यवहारों पर भी इन परिस्थितियों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। इन्हीं कारणों से हमारी परंपराएँ, ज्ञान कुशलता आदि नष्ट होने की संभावनाएँ निर्माण हो रही हैं । इन परिस्थितियों में बालकों की सर्जनशीलता, नैतिकता, तथा आत्मसम्मानों का संर्वधन एवं विकास करना, इन बातों की ओर अधिक ध्यान देना आवश्यक है।

''प्रकृति एवं सामाजिक पर्यावरण इन दोनों में समायोजन करते करते जीवन व्यतित करना ही हमारी आवश्यकताएँ है।

हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं राष्ट्रीय अस्मिता बनाए रखने के लिए पाठ्यक्रमों में नई पीढ़ी को परिवर्तित हो रही सामाजिक परिस्थितियों में नई प्रधानताएँ आदि के संदर्भ में भुतकाल का मूल्यांकन एवं परिशीलन करने की क्षमता निर्माण होनी चाहिए।

अध्यापन यही व्यवसाय के तौरपर स्वीकार करनेवाले प्रशिक्षित तथा समर्पित शिक्षक वर्ग प्राप्त होना यही सभी क्षेत्रों की प्राथमिक आवश्यकता है। तथा सभी शिक्षक में शैक्षिक गुण से परिपूर्ण है।

किसी भी शिक्षा व्यवस्था का गुणात्मक स्तर शिक्षकों की गुणात्मकता के स्तर से ऊँचा हो ही नहीं सकता।

DR.VASUDHA VINOD DEO Associate Professor Govt. college of education akola

प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों की व्यावसायिक तैयारियॉ कर लेना यह बात अत्यंत महत्वपूर्ण है, इस तथ्य को १९६० में स्वीकारा गया, फिर भी इन बातों से संबंधित यथार्थ आज भी बहुत ही चिंताजनक है।

चटोपाध्याय समिति (१९८३ -१९८५) के अनुसार माध्यमिक पाठशाला की शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण का समय कक्षा १२ वी के पश्चात् ५ वर्ष हो तथा कला विज्ञान महाविद्यालयों में शिक्षा/शिक्षण विभाग होना अनिवार्य माना गया जिससे छात्रों को शिक्षक प्रशिक्षण का चुनाव करना आसान हो।

बालकों की आवश्यकताएँ एवं उनकी शिक्षा लेने की रूची को प्रतिसाद देनेवाले शिक्षकों का निर्माण करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त सभी बातों का अवलोकन करने के पश्चात् स्पष्ट होता है कि, आजके तांत्रिक युग में कुछ चिरंतन तथ्यों के मूल्यों को अबाधित रखना अनिवार्य माना गया है। आज आधुनिकता तथा नए ज्ञान की जितनी चर्चाएँ होती हैं उतनी चर्चा हमारे सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय अस्मिता यह हमारे शिक्षा की नींव है। फिर वह शिक्षा माध्यमिक स्तर हो या उच्च तथा महाविद्यालयीन शिक्षा हो तथा शिक्षकों को दी जानेवाली शिक्षा हो। इन सभी बातों का पाठ्यक्रम की रचना में होने के बावजूद भी इन बातों का प्रत्यक्ष पाठ्यक्रम रचना में समावेश दिखाई नहीं देता। आज तक शिक्षा के हर सिढ़ीपर क्षमता एवं मूल्यों का विकास यह केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित रह गया।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में शिक्षा संबंधी विचारों का बार-बार मंथन किया गया उसमें अनेक आदर्श तत्वों को स्वीकृत भी किया गया। व्यक्तित्व विकास के ध्येय को भी इन तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण माना गया। परंतु प्रस्तुत संकल्पना केवल उपरी हिस्सा ही रह गयी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली से मानव विकास संभव हुआ, पर मानव्य विकास होता हुआ दिखाई नहीं देता। हमें दी जानेवाली शिक्षा से हमारी तात्कालिक आवश्यकताएँ तो पूरी होती हुई दिखाई देती है, परंतु हमारी शाश्वत आवश्यकताओं का क्या? वह कैसे पुरी होगी? इन सब बातों का जिम्मेदार कौन? व्यक्ति? समाज? शासन? या शिक्षा, राजनीति या समाजकारण? यह सब विवादात्मक विषय है। परंतु इस बात को हमे मानना ही पड़ेगा कि हम ज्वलंत राष्ट्रीय अस्मितावाली पीढ़ी तैयार करने में नाकामयाब हुए हैं। राष्ट्र का निर्माण करना है तो राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत पीढ़ी निर्माण करना अत्यावश्यक है। परंतु दुर्भाग्यवश वर्तमान पीढ़ी या आज का युवक विदेशियों पर प्रेम करता हुआ

दिखाई देता है। विदेशी तत्वज्ञान तथा विदेशी विचारधारा का प्रभाव वर्तमान युवा पीढ़ी पर हद से अधिक दिखाई देता है। राष्ट्रीयता यह हमारी आत्मा है उसे ही हमने खो दिया है।

प्राचीन युग से किसी न किसी कारणवश हम गुलाम बने थे। यही आदत हमें वैचारिक गुलामी करने पर मजबुर कर रही है। तथा गुलामी हमारी आदत बन गई है। जीवन का हिस्सा बन गई है। इसका परिणाम यह ना हो कि भारत देश फिर से पराधीन तथा किसी देश का मोहताज बन जाए। गुलाम बन जाए। इस संभ्रमित अवस्था से हमे उभरने के लिए केवल शिक्षा यही एक सशक्त माध्यम दिखाई देता है।

भारतीय संस्कृति प्राचीनतम हैं तथा भारतीय अध्यात्म अमर है। राष्ट्र निर्माण का कार्य यदि शिक्षा के माध्यम से करना है तो शिक्षा को ही नई पीढ़ी पर योग्य संस्कार करने होंगे तथा पाठशालाओं में ही मानव निर्माण का कार्य होना आज की प्रथम आवश्यकता है।

वर्तमान युग में भौतिक समृध्दि के ही संस्कार हो रहे हैं। परंतु अध्यात्मिक संस्कृति के संस्कार होते हुए नहीं दिखाई देते। आधुनिकता की ओर अग्रेसर होते हुए नहीं दिखाई देते। आधुनिकता की ओर अग्रेसर होते हुए क्या हमने हमारे प्राचीन ध्येय तथा संस्कृति, अध्यात्म को पीछे छोड़ दिया है?

विकसनशील भारत के लिए पश्चिमी शिक्षा प्रणाली हमें उपयुक्त नहीं दिखाई देती है। यदि भारत देश का विकास केवल भारतीयत्व कोटी आधारभूत मानना होगा। राष्ट्र, अध्यात्म मूल्य, धर्म की नींव रखनी होगी। स्वराज्य स्वतंत्रता, स्वधर्म के लिए नई मर्यादा शिक्षण प्रणाली को प्रदान करनी होगी। किसी भी देश का विकास मनुष्य मानवतापर ही निर्भर होता है। इसीलिए शिक्षा से ही मानव एक संवेदनशील नागरीक बनता है। और यही सत्य है। शिक्षा से संबंधित सभी बातों को/ तत्वों को प्रत्यक्ष रूप में लाने के लिए तथा आनेवाली पीढ़ी में संक्रमित करने में अहम भूमिका शिक्षक की होती है। शिक्षा प्रणाली में शिक्षक एक महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षक शिक्षा प्रणाली में ''रीढ़ की हड्डी है। उसकी भूमिका ''Integrated Human Builder'' की है। प्रशिक्षण के माध्यम से Knowledge, Skill एवं Attitude का होना इन्हीं बातों पर अधिक ध्यान दिया जाता है। शिक्षा की नींव जितनी मजबूत हो उतनी ही शिक्षा प्रणाली मजबुत बनती है। परंतु सही अर्थों में Human Builder की भुमिका यदि शिक्षकों को अच्छी तरह से निभाना है तो उसे छात्रों का आदरणीय बनना पड़ेगा / तथा छात्रों के आदर का पात्र

बनना पड़ेगा। उसे केवल ध्वनिमुद्रक नहीं बनना है। स्वामी चिन्मयानंद के अनुसार ''Only teacher can supply a clear vision.'' इस दृष्टिकोन से शिक्षकों को प्रशिक्षित करना तथा प्रशिक्षण की रचना करते समय पं. दिनदयाल उपाध्याय के अनुसार सर्वप्रथम राष्ट्र की अवधारणाओं को मध्यनजर रखते हुए शिक्षक प्रशिक्षण का भी हमें विचार करना है।

राष्ट्र की अवधारणाओं के संस्करण करनेवाला शिक्षक प्रशिक्षण लेना हमें अनिवार्य रहेगा। क्योंकि उसके कुछ संदर्भ भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं। जो शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों के लिए भी पथ प्रदर्शक बन सकते है।

१) शिक्षक प्रशिक्षण हेतु वैश्विक संदर्भ :-

संपूर्ण विश्व का अधिष्ठान है सत्यं, शिवं एवं सुंदरम् अर्थात यही जीवनमूल्य संपूर्ण जीवन के अधिष्ठान माने गये हैं। सत्य का ज्ञान ही ईश्वर की निष्ठा कहलाता है। विज्ञान ने हमारे जीवन को सुंदर तो बनाया है, परंतु वैज्ञानिक आचरण हमें धर्म के अनुसार ही करना पड़ता है। तथा धर्म का आचरण ईश्वर निष्ठा के साथ करना पडता है। यही ईश्वरनिष्ठा समस्त मानव जाति को ज्ञान प्रदान करती है। इन्हीं कारणों से हमारे विश्व का संतुलन बनाए रखने में मदद होती है। इसी के माध्यम से मानव जाति के मनपर संस्कार हो सकते हैं। उन्हें हम तक पहुँचाने का प्रभावी साधन है शिक्षा। यही कारण है कि शिक्षा के माध्यम से इसे ही सर्वप्रथम शिक्षक प्रणाली में सम्मिलित करना आवश्यक है।

२) शिक्षक प्रशिक्षण का राष्ट्रीय संदर्भ :-

मनुष्य पर सुसंस्कार करना ही शिक्षा का कार्य हैं। मनुष्य को समर्थ बनाने का सशक्त माध्यम शिक्षा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारतीय विचारधारा से प्रभावित पीढ़ी तैयार करनी है तो हमें सर्वप्रथम राष्ट्रीय भावनासे परिपूर्ण सुसंस्कारी शिक्षक तैयार करना हमारी प्राथमिकता है। राष्ट्र केवल एक भुभाग नहीं है, वह है समान परंपराएँ, मूल्य, प्रमाणक, अध्यात्म आदि से प्रेरित तथा जिसपर रहनेवाले व्यक्ति विकास का समान ध्येय रखते है। राष्ट्र का तत्वज्ञान ही देश का प्राण राष्ट्र की आत्मा है। पं. दीनदयाल उपध्यायजी ने जो राष्ट्र की अवधारणा स्पष्ट की है उसमें चिती एवं विराट इन दोनों को विशेष महत्व दिया है। चिती का अर्थ है राष्ट्र का स्वत्व, राष्ट्र की आत्मा, एवं अध्यात्म यही भारत का स्वत्व है। भारत देश का यदि अंतरंग देखना है

तो भारतीय अध्यात्म को पुनर्जीवन देना पडेगा। यह बात स्वामी विवेकानंद ने कहीं है। और इसलिए शिक्षा का मुलाधार अध्यात्म को ही मानना पडेगा। अध्यात्म यही भारत की राष्ट्रीय अस्मीता है। इस दृष्टि से शिक्षा की दिशा निश्चित करना यही शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

३) सामाजिक संदर्भ :- शिक्षा यह 'विराट' इस अवधारणा से संबंधित होनी चाहिए। अर्थात समाज का पुरूषार्थ जागृत करने वाली शिक्षा देना आवश्यक है। प्रत्येक राष्ट्रीय समाज के अंतर में एक विकासक्षम आंतरिक ऊर्जा होती है। उसे एक निश्चित दिशा होती है उस ऊर्जा को योग्य दिशा में गतिमान करना ही राष्ट्रीय समाज का विराट जागृत करना है। इस अर्थ में आत्मनो मोक्षार्थ जगत् हितायच यही व्यक्ति का जीवन साफल्य है। कृष्णन्तो विश्वमार्यस यही सामाजिक संकल्प है तथा सर्वेपि सुखिनः सन्तु यह विश्वकल्याण की भावना ही शिक्षा का मुलधार है।

मनुष्य को जिस प्रकार व्यक्तित्व होता है उसी प्रकार समाज का भी एक व्यक्तित्व होता है। समाज को भी पुरूषार्थ होता है। यह पुरूषार्थ राष्ट्रीय आकांक्षाओं से मिलता जुलता होना चाहिए। यह बात निचे दी गई आकृती के माध्यम से समाज का व्यक्तित्व तथा समाज का पुरूषार्थ स्पष्ट हो सकता है।

आकृती

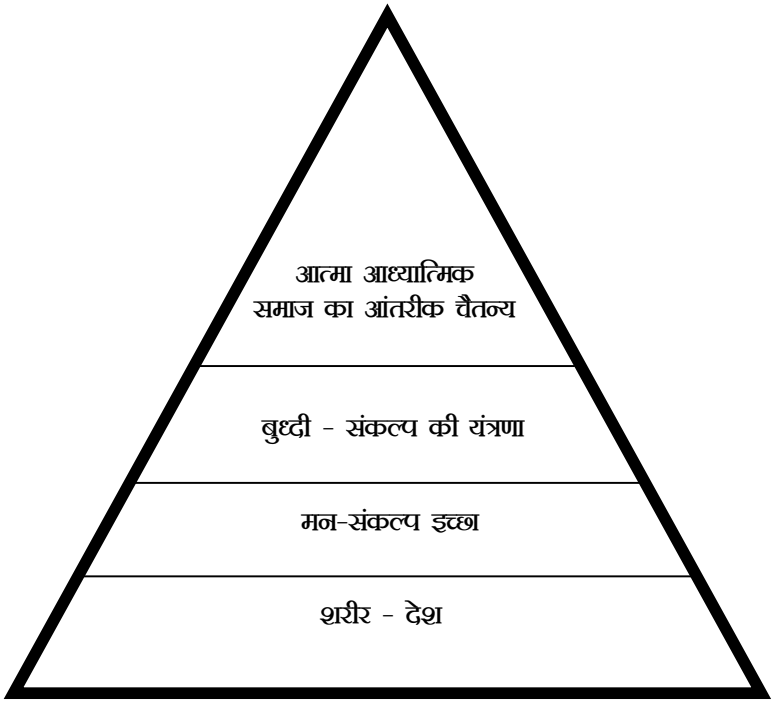

क्या हम इन तत्वों को शिक्षक प्रशिक्षण का आधार बना सकते है?

४) शिक्षक प्रशिक्षण का व्यक्तिगत संदर्भ :- शिक्षा की परिभाषा के अनुसार, ''व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा है। व्यक्ति का व्यक्तित्व चतुर्विध होता है। यह बात निचे दि गई आकृति के माध्यम से स्पष्ट होती है।

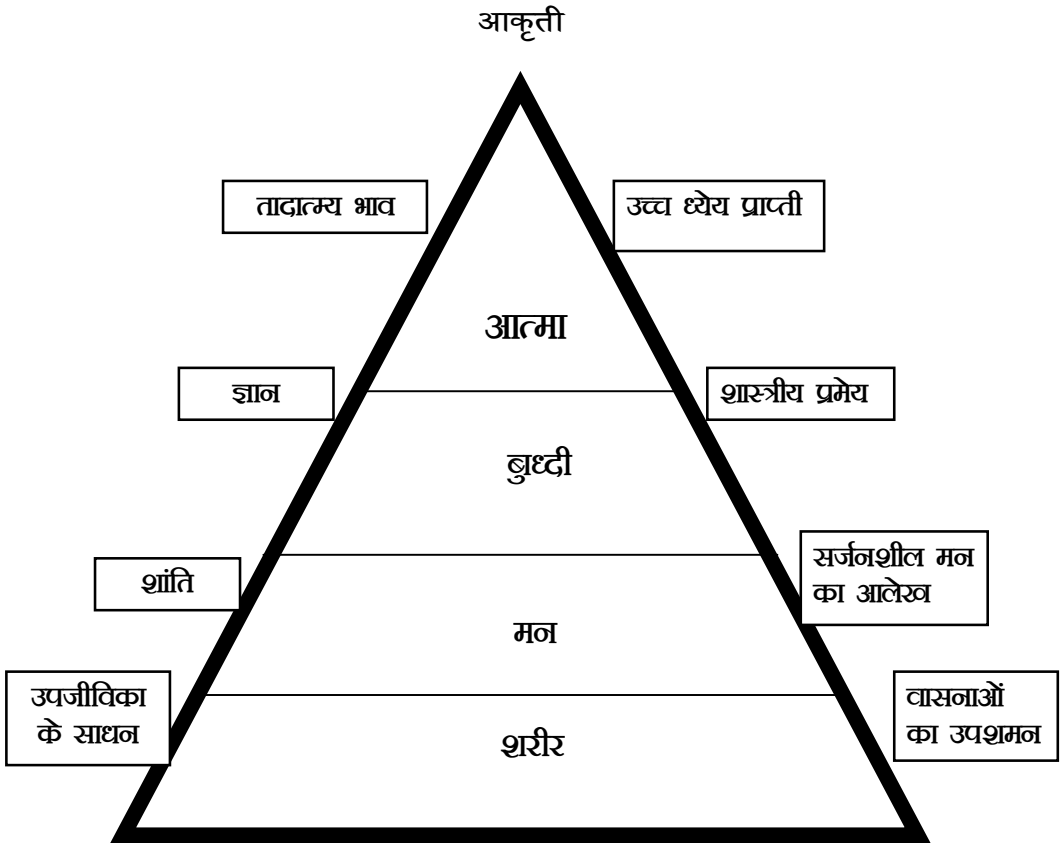

मनव के चतुर्विध व्यक्तित्व

जिस प्रकार मानव का व्यक्तित्व चतुर्विध है उसी प्रकार उसकी सुख की प्रेरणाएँ चतुर्विध होती है। यह निचे दि गई आकृति से स्पष्ट होता है।

आकृती

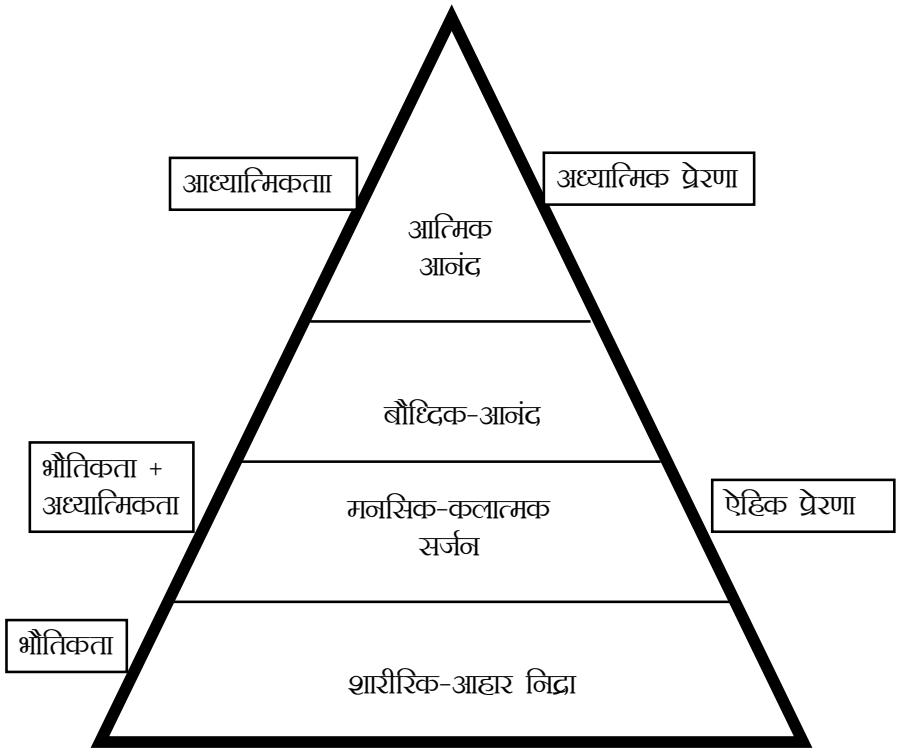

मानवी मन में स्थित आत्मीय एहसास का दायरा विशालता व्यापकता की ओर जानेवाला है, पुर्णत्व की ओर जाना, पूर्णत्व में विलिन होना यही मनुष्य की कोशिश होती है। इस दायरे का आरंभ 'स्व' से होकर वैश्विकता की ओर जाता है। यही बात आकृति के माध्यम से स्पष्ट होती है।

DR.VASUDHA VINOD DEO Associate Professor Govt. college of education akola

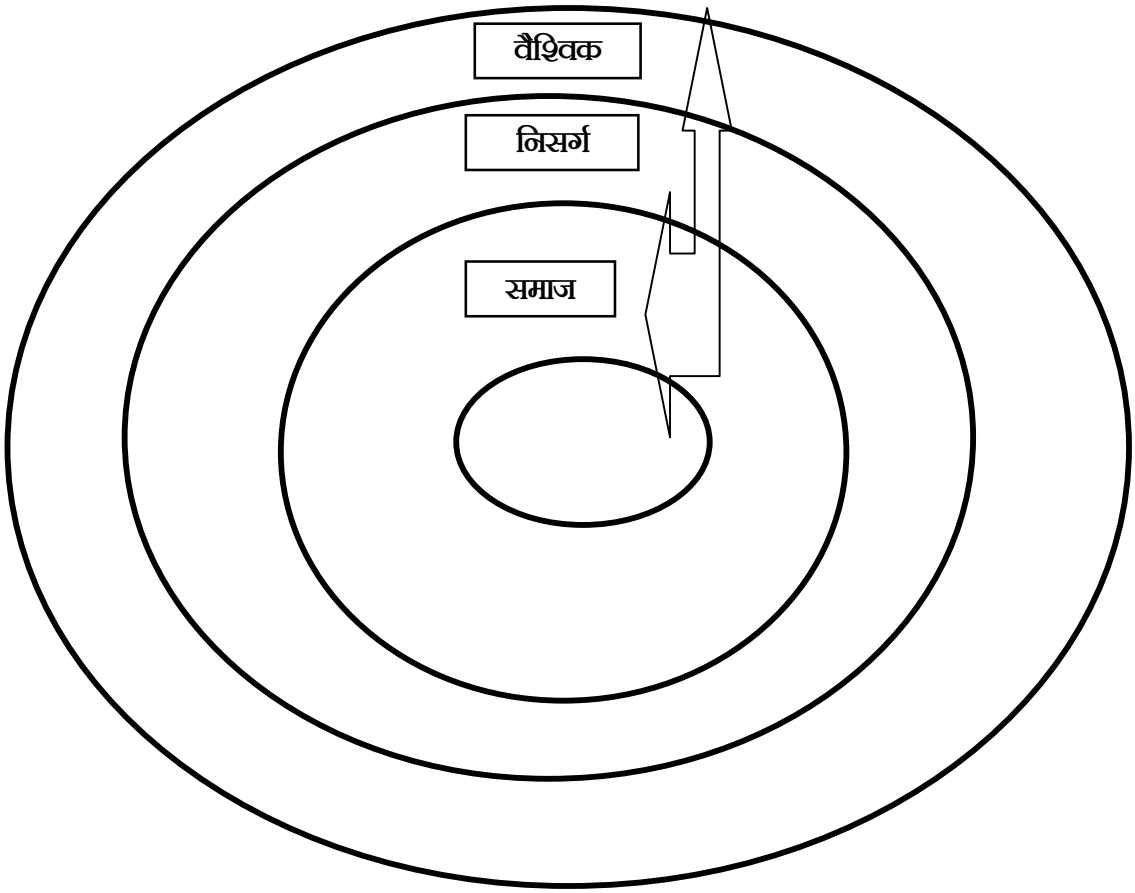

क्या हम इसे शिक्षा को मुलाधार बना सकते है? हॉ यदि यही शिक्षा का निजी संदर्भ होगा।

५) गुणात्मकता के संदर्भ :- प्रत्येक व्यक्ति तक शिक्षा का स्त्रोत पहुॅचना चाहिए। उसके लिए गुणात्मकता महत्वपूर्ण मानी जाती है। क्योंकि मुलत: गुणात्मकतापूर्ण शिक्षा मिलने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षक प्रशिक्षण में शामिल सभी घटक तत्वों को गुणात्मक संदर्भ होते है। शिक्षक शिक्षा के माध्यम से ऐसे शिक्षक निर्माण हो जो राष्ट्र की अवधारणा से ओतप्रोत हो और इसीलिए शिक्षक को चाहिए की शिक्षा के प्रवाह में आकर सभी क्षमताओं को संपादित करें। क्षमता प्राप्त करने के लिए संपूर्ण राष्ट्र की अवधारणाओं से परिचय होना, उसका ज्ञान तथा उसी ज्ञान एवं क्षमताओं के माध्यम से नई पीढ़ी का निर्माण करना, उन्हें सुसंस्कारित करने का हुनर संपादन करना ही गुणात्मकता की कसौटी होगी। केवल भौतिक संसाधन अथवा नतीजा यह गुणात्मकता की कसौटी नहीं हो सकती। समर्पित शिक्षक निर्माण करने के लिए निश्चित किया गया ज्ञान एवं कुशलता यही गुणात्मक कसौटी होगी। ज्ञान एवं कुशलता विकसित करने के लिए

कौन से विषय, कौन सा कार्य निश्चित किया है यही गुणात्मकता की कसौटी होगी। विषय का चयन करते समय राष्ट्रीय, सामाजिक, आध्यात्मिक संदर्भ ही पाठ्यक्रम के Indicators होंगे। इसके आधार पर ही पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रमपुरक उपक्रम आदि का नियोजन महत्वपूर्ण होगा। पाठ्यक्रम अवधारणाओं को भारतीय तत्वज्ञान, मूलव्यवस्था, राष्ट्रीय अवधारणा, सामाजिक पुरूषार्थ आदि सभी तत्वों से जोडना पड़ेगा। जीवन के समग्र गुणात्मकता से शिक्षक प्रशिक्षण की गुणात्मकता संबंधित होती है। फिर भी गुणात्मकता के संदर्भ केवल व्यवस्था एक ही सीमित नहीं तो उन्हें मानवी मन, बुध्दि आदि मानवीय तत्वों से जोडना पडेगा। ऐसा सोचकर ही मन में स्थित अवधारणाओं के कारण होनेवाली मन की रचना/ बनावट ही उसका संदर्भ हो सकती है। शाश्वत विकास की अवधारणाओं से शिक्षक शिक्षा को जोड़ना आवश्यक है। क्योंकि बुध्दि की निर्णय क्षमता, बौध्दिक विकास, मानसिक, आध्यात्मिक तथा गुणात्मकता का विकास ही महत्वपूर्ण होता है।

शिक्षक प्रशिक्षण की दृष्टि से प्रशिक्षण के अधिष्ठान के तौर पर यह संदर्भ महत्वपूर्ण होते है। इन सब बातों का विचार करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते है कि, शिक्षक प्रशिक्षण के वास्तविक ध्येय कौन-से होने चाहिए? कौन कौन-से विषयों का समावेश प्रशिक्षण में होना चाहिए, पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए कितना समय वर्ष देने चाहिए? इस प्रकार के अनेक प्रश्न हमारे सामने उपस्थित होते है।

शिक्षक प्रशिक्षण के ध्येय / लक्ष्य :-

स्वामी चिन्मयानंद जी के मतानुसार शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों के नीचे दिए गए गुणों का प्रादुर्भाव होना चाहिए।

1) The practice of what is right & proper as indicate in scripture.
2) Living the ideal that have been intellectually comprehended during the status.
3) A spirit of self sacrifice.
4) Control of Sense.
5) Tranquility of mind.
6) Practice of concentration.
7) Doing ones duty towards humanity.

उपर्युक्त गुणों का निर्माण शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से होना हमारी प्राथमिकता है। इस प्रक्रियाओं में शिक्षक / अध्यापक की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। इस दृष्टि से निचे दिए गए कुछ संस्कार भी प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों पर होने चाहिए।

1) Worked as team
2) Serving as a preacher
3) Nourshing the character

शिक्षक सही अर्थों में Pure living का उदा. शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों के निचे दिए गए कुछ दृष्टिकोण भी विकसित होने चाहिए :-

1) To give, To sure, To share यही knowledge शिक्षकों की भूमिका होनी चाहिए।
2) Real education means transformation of knowledge in to wisdom
3) ज्ञान एवं हमारी कृतियों का समन्वय होना चाहिए।
4) वर्तमान युवा पीढ़ी को केवल factual या Wondrous Theory पढ़ाने से काम नहीं होगा उन्हें जीवन के आदर्शों का परिचय देना हमारा उत्तरदायित्व होगा।
5) शिक्षा का अर्थ चारित्र्य संपन्नता।
6) एक अच्छा शिक्षक केवल Instruction का उपयोग नहीं करेगा वह सही मायनों में philosopher guide बनेगा।
7) भारतीय संस्कृति, मूल्य, तत्वज्ञान आदि समझने की क्षमता प्रशिक्षण के माध्यम से होना आवश्यक है।
8) भारतीयत्वता को जागृत करनेवाले संस्कार प्रशिक्षण के माध्यम से होना आवश्यक है।
9) शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से व्यक्तित्व विकास के संपूर्ण ज्ञान का परिचय होना चाहिए तथा ज्ञान प्राप्त होना चाहिए।
10) राष्ट्रीय दृष्टीकोण, सांस्कृतिक दृष्टीकोण, धार्मिक दृष्टिकोण, संविधान के प्रति जागृत होना ही प्रशिक्षण की आत्मा होनी चाहिए।
11) व्यवसाय के प्रति समर्पण की भावना होनी चाहिए।
12) शिक्षा से शिक्षक Creative, Innovative बनना चाहिए।

13) धर्म एवं विज्ञान के प्रति समन्वयात्मक दृष्टि निर्माण होनी चाहिए।

14) धर्म, अध्यात्म के प्रति अध्ययन कर्ता की भूमिका विकसित होनी चाहिए।

15) वर्तमान युग तकनिकी ज्ञान का युग है, विज्ञान युग है इस बात को ध्यान में रखना चाहिए, इसलिए शिक्षक शिक्षा के माध्यम से Knowledge Master एवं Wisdom Master यह दोनों भूमिकाएँ स्पष्ट तथा विकसित होना आवश्यक है।

16) शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यापकीय व्यक्तित्व विकसित होना आवश्यक है।

१) शिक्षक प्रशिक्षण के लक्ष्य। ध्येय अध्यापकीय व्यक्तित्व विकास यही होने चाहिए, जिसमें कुछ घटक तत्वों का समावेश किया गया है।

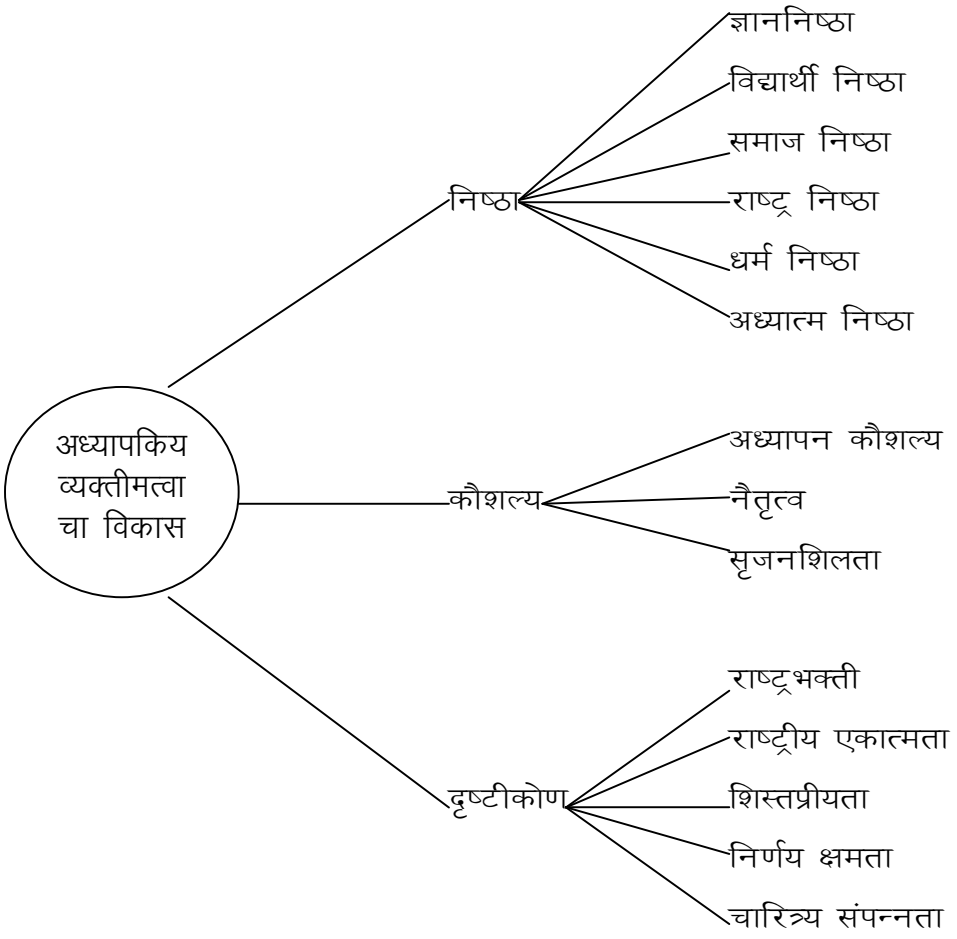

१) निष्ठा का निर्माण होना :- शिक्षक / अध्यापक शिक्षा से निष्ठावान शिक्षक तैयार होना चाहिए। निष्ठाएँ निचे दिए गए घटकों से संबंधित निर्माण होनी चाहिए।.

१. ज्ञाननिष्ठा	२. धर्मनिष्ठा
३. अध्यात्मनिष्ठा	४. राष्ट्रनिष्ठा
५. समाजनिष्ठा	६. विद्यार्थीनिष्ठा
७. प्रकृतिनिष्ठा	८. चारित्र्यनिष्ठा
९. मूल्यनिष्ठा	१०. शांतिनिष्ठा

२) दृष्टीकोण विकास - अवधारणाओं का विकास

१. मानव का चतुर्विध व्यक्तित्व।

२. मानव एवं विश्व का संबंध।

३. व्यक्ति एंव समाज का सहसंबंध।

४. ऐहिक, आध्यात्मिक, सामाजिकता में संतुलन।

५. राष्ट्रीय व्यक्तित्व।

६. राष्ट्रभक्ति।

७. राष्ट्रीय एकता।

८. निर्णय क्षमता।

९. चारित्र्य संपन्नता।

१०. वैश्विक दृष्टिकोण।

दृष्टिकोण :- शिक्षक शिक्षा से निचे दिए गए दृष्टिकोण विकसित होने चाहिए।

१) <u>राष्ट्रभक्ति व राष्ट्रीय एकात्मता :-</u>

राष्ट्र केवल किसी एक भूमिपर रहनेवाले लोगों का समुह नहीं है, राष्ट्र है उच्च शिक्षा समान ध्येय के लिए कार्य करनेवाले व्यक्ति, जब किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में एकत्रित होते हैं, तभी वह भूप्रदेश राष्ट्र कहलाता है। यही संस्कार शिक्षा का मर्म है। ध्येय के प्रति निष्ठा कार्य करने की प्रेरणा होती है। संकल्पना शक्ति होती है जो प्रेरणात्मक वातावरण का निर्माण करती है। इन सभी तत्वों से प्रामाणिक रहनेवाली

मानव की बुध्दि होती है। तात्पर्य शिक्षक का राष्ट्रभक्त होना हमारी प्रथम आवश्यकता है।

२) **अनुशासन प्रियता** :-

शिक्षक अनुशासन प्रिय होना चाहिए। स्वयं अनुशासन तथा आत्मानुशासन से परिपूर्ण होना चाहिए। बाहयानुशासन ही आंतरिक अनुशासन में परिवर्तित होना चाहिए। यही अनुशासन ध्येय / लक्ष्य के प्रति भक्ति, समर्पण, कर्मयोग के अनुसार आचरण, समाजसेवा, हृदयशुध्दि, संस्कृति का विकास, आत्मशिक्षा यही प्रत्यक्ष रूप से अनुशासन है। यही अनुशासन, शिक्षकों को संघटीत व्यक्तित्व प्रदान कर सकता है। अनुशासन शारीरिक, बौध्दिक, मानसिक स्तर पर होना चाहिए। और इसलिए सदाचरण की पढ़ाई विशेष महत्व रखती है।

३) **चारित्र्य संपन्नता** :-

संक्षेप में चारित्र्य की परिभाषा देना है तो हम कहेंगे कि, अच्छी आदतों का होना ही चारित्र्य का गठन है। अच्छी आदतें अच्छी कृतियों की वारंवारिता पर निर्भर होती है। अच्छी आदतें अच्छी कृतियॉ अच्छे विचारों पर निर्भर होती है। शिक्षक शिक्षा के माध्यम से योग्य विचारों का गठन कर सकता है।

४) **नेतृत्व क्षमता** :- समाज का नेतृत्व शिक्षक ही करता है। किसी भी देश का परिचय ही शिक्षक के माध्यम से होता है। ऐसा कहना गलत नहीं होगा। समाज शिक्षक का ही अनुकरण करता है तथा छात्र भी अपने जीवनमूल्यों को शिक्षक के जीवनमूल्यों पर ही निश्चित करते है। शिक्षक के जीवनमूल्यों पर ही निश्चित करते हैं शिक्षक को Vision होना नितांत आवश्यक होता है। समाज को पुनर्जीवित करने के लिए समाज के नेतृत्व में देवत्व के गुण होने की आवश्यकता होती है। संतुलित दृष्टि का विकसित होना भी शिक्षक शिक्षा से अपेक्षित है।

५) **नाविन्य के प्रति सकारात्मकता** :- शिक्षक शिक्षा से जिस प्रकार Wisdom Master होता है, उसी तरह Knowledge Master भी होता है। उसके लिए आधुनिक तकनिकी, विज्ञान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण निर्माण होना आवश्यक है। आधुनिक तकनिकी ज्ञान की उत्पत्ती करनेवाला हमारा देश है। इस बातों को स्वीकृत कर उसका अध्ययन तथा उन सभी ज्ञान का उपयोग विवेकशीलता से करना हे तो सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है।

३) **कौशल्य / कुशलता को विकसित करना** :-

१) **अध्यापन कौशल्य** :- प्राचीन तथा आधुनिक अध्ययन पध्दतीयों में मेल रखना आवश्यक है। प्रत्येक अध्यापन पध्दतियों में मेल रखना आवश्यक है। प्रत्येक अध्यापन पध्दतियों पर भी प्रभुत्व निर्माण होना चाहिए। इसलिए शिक्षक शिक्षा में विविध कृति सत्रों का उपयोग हम कर सकते है।

२) **आत्मप्रभुत्व** :- शिक्षकों में आत्म प्रभुत्व कौशल्य का निर्माण होना अत्यावश्यक है। क्योंकि वर्तमान युग में प्रत्येक क्षेत्रों में जानलेवा स्पर्धा शुरू है। हर व्यक्ति हर क्षेत्र में अन्य लोगों पर प्रभुत्व किस प्रकार प्रस्थापित कर सकते है यही विचार अग्रीम होता है। परंतु व्यक्ति जब तक स्वयं पर प्रभुत्व प्राप्त नहीं करता वह विश्वपर प्रभुत्व कैसे प्राप्त कर सकता है? आत्मप्रभुत्व संपादन हेतु हमे ज्ञान तथा उच्चतम जीवन मूल्यों पर हावी होना चाहिए यह सब बातें या गुण शिक्षकों हो तो वही अपने छात्रों में भी समयोचित परिवर्तन ला सकते है।

३) **सृजनशिलता** :- शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों की सृजनशीलता विकसित होनी चाहिए। वैश्विक स्तर पर सृजनशीलता की चर्चाऍं हो रही है। teaching for creativity इस अवधारणा को सभी शिक्षाशास्त्रीयों ने मान्यता दी है। सृजनशीलता निर्माण के जो साधन है वह बुध्दि, ज्ञान तथा व्यक्तिमत्व तथा परिक्षेत्र आदि के यथोचित ज्ञान से शिक्षक परिचित हो तो वह छात्रों में सृजनशीलता निर्माण कर सकता है। इसलिए विशिष्ट अध्यापन पध्दति का संपूर्ण ज्ञान शिक्षकों को देना आवश्यक है, उसमें

मुख्यतः problem oriented, case studies, simulation, Roll play, Action research. आदि तत्वों का होना आवश्यक है।

शिक्षक शिक्षा के माध्यम से उपर्युक्त लक्ष्य प्राप्त कर सकता है, परंतु उसके लिए कुछ विषयों का पुनर्नियोजन करना होगा। विविध उपायों को ध्यान में रखकर उस पर विचार विर्मश के पश्चात् ही उसका निर्धारण हो। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों से जो अभिव्यक्त होता है उसका ही हमें अनुसरण करना होगा ताकि विषयों का सही नियोजन हो सके।

शिक्षक शिक्षा तथा पाठ्यक्रम – शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम तात्विक एवं प्रात्यक्षिक दोनों स्तर पर होना चाहिए। उसका संक्षेप में प्रारूप निचे दिया गया है।

१) **विकास का प्रारूप निश्चितकर कुछ विषयों की सूची निचे दी गई है।**

१. मानवी व्यक्तित्व के तात्विक अधिष्ठान एवं शिक्षा।
२. शांति की शिक्षा।
३. मन व्यवस्थापन।
४. शाश्वत विकास की शिक्षा।
५. भारतीय मनोविज्ञान।
६. मूल्यशिक्षा।
७. ध्यान शास्त्र।
८. आत्मसंयम की शिक्षा।
९. कला तथा हस्तकलाएँ।
१०. बाल मनोविज्ञान तत्व एवं व्यवहार।

२) **सहसंबंधो का आकृतिबंध / प्रारूप** :- विकास के प्रारूप के अनुसार कुछ विषयों की हम सूचनाएँ दे सकते है।

१. मानव का आध्यात्मिक अधिष्ठान।
२. समाज के आध्यात्मिक अधिष्ठान।
३. पर्यावरण शिक्षा।

४. प्रकृति के अध्यात्मिक अधिष्ठान ।

५. सहअस्तित्व की शिक्षा ।

६. अस्तित्व के नियमों की शिक्षा (धर्म एवं शिक्षा) ।

७. भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा ।

३) <u>राष्ट्रीय शिक्षा का प्रारूप/ आकृतिबंध</u> :- मुख्यत: राष्ट्रप्रेम की शिक्षा महत्वपूर्ण है, इसलिए कुछ विषयों का निर्धारण हम कर सकते है ।

१. उत्तरदायित्व की शिक्षा (Education for Accoutability)

२. Education for Citizenship

३. भारतीय शिक्षा का इतिहास ।

४. संत साहित्य एवं शिक्षा ।

५. महान शिक्षाशास्त्री ।

६. भारतीय तत्वज्ञान एवं शिक्षा ।

४) <u>धार्मिक शिक्षणाचा आकृतिबंध</u> :- निचे दिए गए विषयों का अंतर्भाव कर सकते है ।

१. सह अस्तित्व की शिक्षा

२. विविध धर्म की शिक्षा

३. Spiritual Education & Practice

४. Meditation, Yoga, Japayoga.

५) नये युग से नाता जोडने के लिए शैक्षिक तकनिकी जैसे विषय हम पाठ्यक्रमों में अंतर्भूत कर सकते है। शिक्षा के व्यवस्थापन का इतिहास तथा नये विचार प्रवाह जैसे विषय भी हम नए ज्ञान से संबंध रखने के लिए तथा नाता जोडने के लिए अंतर्भूत कर सकते है ।

<u>प्रात्याक्षिक कार्यांतर्गत</u> :- आज प्रात्यक्षिक कार्यांतर्गत विविध अध्यापन पध्दति, अध्यापन प्रतिमान, आशययुक्त अध्यापन पध्दति तथा अध्यापन पध्दति की नई तकनिक पढ़ाते है इसी के साथ-साथ कुछ प्राचीन पध्दति के संदर्भ में विविध पध्दतियॉ विकसित कर सकते है ।

१. वासनाक्षय पध्दति

२. आत्मनिरिक्षण पध्दति

३. विचार पध्दति

४. कार्यकारण पध्दति

उपर्युक्त पध्दतियों का भारतीय उपनिषदों में उल्लेख मिलता है। इन विषयों को पढ़ाने के लिए शिक्षक को कुशल बनाना आवश्यक है। इन्हीं के कारण ज्ञान का निर्माण करने की क्षमता छात्रों में निर्माण करने की क्षमता छात्रों में निर्माण हो सकती है।

विविध कृतीसत्र तथा परिसंवादों का आयोजन :- शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में आज भी परंपरागत पध्दति से शिक्षा दी जाती है। अध्ययन के लिए स्वयं अध्ययन अधिक प्रभावी है। इसका उद्देश्य यही है कि भारतीय विचारधारा का आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ाई करने की क्षमता शिक्षकों में निर्माण होना आवश्यक है। शिक्षक अध्ययन की प्रक्रिया में कृतिशील बनेंगे तो शिक्षा में शामिल होना, सहयोग देना किसे कहते है इसका भी आकलन होगा। संवाद एवं परिसंवाद का आयोजन करने से प्रशिक्षण का स्तर बढ़ेगा। सिध्दांत एवं कृतिशीलता का समन्वय करने की क्षमता विकसित करने के लिए चर्चासत्र, परिसंवाद आदि का आयोजन करना उपयुक्त होगा। इसके अतिरिक्त विविध कार्यशाला, प्रकल्प आदि का अंतर्भाव करना होगा, तथा प्रधानाचार्य तथा सहयोगी अध्यापकों को भी इसमें शामिल कर सकते है। तथा समाज के विविध व्यक्तियों का भी इसमें सहयोग ले सकते है।

पत्राधार संच तैयार करना :- प्रत्येक शिक्षक को प्रशिक्षण काल में स्वयं का पत्राधार संच तैयार करना अनिवार्य हो। जिससे स्वयं का विकास, स्वयं में जो परिवर्तन होते है उसे वे पहचान सके। यह पोर्टफोलिओं तज्ञ लोगों के मार्गदर्शन में हो इस पोर्टफोलिओ आत्मनिरिक्षणावर तथा मन व्यवस्थापन पर आधारित हो।

मूल्यांकन :- शिक्षक प्रशिक्षण की मूल्यांकन पध्दति में निचे दिए गए गुणों का मूल्यांकन हो।

१. Original thinking

२. Indipendent judgement

मूल्यांकन के लिए विविध साधनों का विकास करना होगा। परीक्षा पध्दति पर अधिक जोर न देकर अभिव्यक्ति मूल्यों की ओर ध्यान देना आवश्यक है। यह मूल्यांकन त्रिस्तरीय होना चाहिए।

१. अध्यापकों ने किया हुआ मूल्यांकन।

२. तज्ञों के उपस्थिति में स्वयं ने किया हुआ मूल्यांकन।

३. सहध्यायी प्रशिक्षणार्थियों ने किया हुआ मूल्यांकन।

प्रस्तुत मूल्यांकन के साधनों का निर्माण हो सकता है अर्थात मूल्यांकन quantitative तथा qualitative होना चाहिए। (जिससे परंपरागत मूल्यांकन पध्दति से छुटकारा मिल सकता है।) जिससे परंपरागत मूल्यांकन पध्दति से हम मुक्त हो सकते है।

अभ्यास का कालखंड / सरावकाल :- सेवाभावी शिक्षक तैयार करने की दृष्टि से प्रत्येक प्रशिक्षार्थी या छात्राध्याप की सेवा १ साल के लिए विविध विद्यालयों में अनिवार्य कर दी जाए। इस सेवा कालखंड में उसे अपनी सेवा का अहवाल तैयार करना अनिवार्य हो। इस सेवांतर्गत पोर्टफोलिओ उसने तैयार करना आवश्यक होगा।

शिक्षक शिक्षा संस्था :- वर्तमान युग में हम देखते है कि शिक्षा संस्था का स्तर दिन-ब-दिन घटता जा रहा है। शिक्षक संस्थाका स्वरूप गुरुकुल पध्दतिपर आधारित हो तथा शिक्षक अध्ययनप्रेमी हो। शिक्षासंस्था में प्रात: काल से लेकर संध्यासमय तक समयसारणी निश्चित की गई हो। स्वावलंबन पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्हें हर समय उच्च व्यक्तित्व तथा उच्च विचारों के महानुभावों के साथ समय व्यतित करने का भी प्रावधान उसमें हो। संस्था का मिशन व्हिजन राष्ट्र की ऊर्जा से जुड़ा हुआ हो। संस्था के मानवीय घटक सुसंस्कृत भारतीय विचारधारा से ओतप्रोत, राष्ट्र भावना, धर्मप्रेम तथा नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा रखनेवाले हो।

कालाखंड :-

शिक्षक /अध्यापक प्रशिक्षा का कालखंड ५ साल का हो। उसके पश्चात् १ वर्ष छात्रसेवा काल हो। अर्थात संपूर्ण प्रशिक्षा का कालखंड कुल ६ वर्ष का तय करना अनिवार्य हो। शिक्षक / अध्यापक का सर्वांगीण विकास करना कुछ सालों का कार्य नहीं है। हम देखते है की शरीर का डॉक्टर बनने में ७/८ साल लगते है, तो मन के

डॉक्टर को हम कम समय क्यों दे? इसका भी विचार होना अनिवार्य है कारण शिक्षक शिक्षा से हमें knowledge master एवं wisdom master तैयार करना है। कक्षा १० वी के पश्चात् यह प्रशिक्षा / प्रशिक्षण दिया जाए, प्रवेश लेने से संबंधित कुछ नियम हो। आधुनिक शैक्षिक योजनाओं में शिक्षक प्रशिक्षण पारंगत स्नातक से जोडने का प्रस्ताव दिया है। परंतु जिस विषय का अध्यापन कार्य उसे करना हैं उसी विषय का अध्ययन शिक्षक शिक्षा में समाविष्ट हो। स्नातक स्तर पर ही शिक्षण शास्त्र विषय अंतर्भूत करने से अच्छा है कि शिक्षणशास्त्र स्नातक पाठ्यक्रम में सामाजिक शास्त्र, विज्ञान आदि विषयों का अंतर्भाव हो। शिक्षणशास्त्र / शिक्षाशास्त्र के स्नातकोत्तर स्तर पर संशोधन कार्य एवं प्रगत अध्ययन कार्य से संबंधित हो तथा यह कार्य कृतिपर आधारित हो।

सेवांतर्गत प्रशिक्षण :- शिक्षक यदि बी. एड्. सेवांतर्गत प्रशिक्षण लेने के बाद उसे प्रशिक्षित कहा जाता है। यह धारणाएँ हमें बदलनी होगी। विविध विषयों से संबंधित परिसंवाद, कृतिसत्र, चर्चासत्र आदि के माध्यम से शिक्षकों की शिक्षा शुरू रखना अनिवार्य है। नियोजन के अनुसार पाठ्यक्रम पूर्ण करना शिक्षक को बंधनकारक हो। इसके लिए काल / समय का बंधन निश्चित कर देना चाहिए।

उपर्युक्त दिए गए शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए केवल निर्देश दिए गए है। इसी आधार पर शिक्षक प्रशिक्षण का एक प्रारूप तैयार करना समय की मांग है।

REFERENCES

DEO VASUDHA (2006) SHAIKSHANIK CHINTAN , NAGPUR: VISA BOOKS ISBN 81-903849-7-X

DEO VASUDHA (2009) SHIKSHANOPANISHAD ,NAGPUR: MANGESH PRAKASHAN ISBN 978-81-89904-47-0

WANJARI,DEO (2008) UDAYONMUKH BHARTIYA SAMAJATIL SHIKSHAN NAGPUR VISA BOOKS ISBN 978-81-906172-1-5

DR.VASUDHA VINOD DEO Associate Professor Govt. college of education akola